ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

अप्रैल-सितम्बर (संयुक्तांक) 2019

हमारा कथा - समय - 1

₹50/-

लमही

इस अंक में

वर्ष: 11–12 • अंक: 4–1 • अप्रैल–सितम्बर (संयुक्तांक) 2019

पड़ताल ।।

- स्त्री कथा और अनुभवजन्य आख्यान —पंकज पराशर 06
- **ममता कालिया** : जंजीरें तोड़, अँधेरे से बाहर निकलती औरत —ओम प्रकाश मिश्र 10
- **सूर्यबाला** : सामाजिक विसंगतियों से जूझती कहानियाँ —डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह 13
- **मृदुला गर्ग** : उनका हक़ीक़त और जोख़िम भरे यथार्थ से गर्भनाल का रिश्ता है —प्रज्ञा पाण्डेय 17
- **सुधा अरोड़ा** : भूमंडलीकरण के संवेदनात्मक आयाम उकेरती कहानियाँ —ओमप्रकाश मिश्र 20
- **नासिरा शर्मा** : विस्तृत वितान की कहानियाँ —विजय शर्मा 23
- **शीला रोहेकर** : कथारस के नये आस्वाद की कहानियाँ —उपासना 29
- **नमिता सिंह** : मजबूत स्त्री और उसकी मजबूत छवि की प्रस्तुति —मनीषा जैन 32
- **दीपक शर्मा** : कस्बापुर का चमड़े का अहाता है लेखिका का कथा जगत —मधु बी. जोशी 35
- **सुमति सक्सेना लाल** : सूक्ष्म अंतर्द्वंद्व की रचनाकार —श्रुति 39
- **मैत्रेयी पुष्पा** : समकालीन स्त्री–विमर्श के आइने की कहानियाँ —अनुराधा गुप्ता 42
- **उषा किरण खान** : यहाँ स्त्रियाँ जीवन संघर्ष की रीढ़ हैं —प्रज्ञा पाण्डेय 48
- **मधु कांकरिया** : मानवीय गरिमा और संघर्षों की कहानियाँ —उषा राय 51
- **आशा प्रभात** : यथार्थबोध से जुड़ा है कहानियों का विषय —डॉ. स्नेहा सिंह 54
- **सुषमा मुनीन्द्र** : दरकते प्रेम की कहानियाँ —साधना अग्रवाल 57
- **सारा राय** : यथार्थ की भीतरी तहों तक पहुँचती दृष्टि —शंभु गुप्त 60
- **गीतांजलि श्री** : कहानियों में वैकल्पिक यथार्थ की खोज —शंभु गुप्त 63
- **अलका सरावगी** : कहानी की तलाश जारी है —विजय शर्मा 67
- **लवलीन** : मर्यादित स्त्री छवि को तोड़ती कहानीकार —डॉ. पूर्णिमा मौर्या 71
- **वंदना राग** : विविध रंगों में रंगी कहानियाँ —वंदना पाण्डेय 75
- **मनीषा कुलश्रेष्ठ** : कहानियों में स्त्री–अस्मिता के स्वर —मीना बुद्धिराजा 78
- **महुआ माजी** : एक अलग आस्वाद की कहानियाँ —संजय कृष्ण 81
- **जयश्री राय** : निर्दोष होने से बड़ा कोई दोष नहीं... —सौरभ शेखर 85
- **जया जादवानी** : कहानी की नई इबारत लिखती हैं —ब्रजेश 87
- **वंदना देव शुक्ल** : अनुभवों के नए सीमान्त की कहानियाँ —डॉ. अंकिता तिवारी 90
- **उर्मिला शिरीष** : निर्वासित यथार्थ की कहानियाँ —आनंद कुमार सिंह 94
- **रजनी गुप्त** : समय के ताप से मुठभेड़ करती कहानियाँ —शशिभूषण मिश्र 99
- **निर्मला भुराड़िया** : समय रचती कहानियाँ —डॉ. कल्पना पंत 103
- **अल्पना मिश्र** : जीवन के खुरदुरे यथार्थ की कहानियाँ —डॉ. कल्पना पंत 105
- **नीलाक्षी सिंह** : यथार्थ का नया व्याकरण रचती कहानियां —ब्रजेश 108
- **प्रत्यक्षा** : अनबूझ मोड़ से भी राहें गुजरती हैं —अल्पना सिंह 111
- **कविता** : उजास की कथाकार —श्रुति 114
- **किरण सिंह** : देर तक बेचैन रखने वाली कहानियाँ —पंकज सुबीर 117
- **आकांक्षा पारे काशिव** : जिंदगी से टहल कर निकली हुई कहानियाँ —पंकज सुबीर 124
- **ज्योति चावला** : खामोशी, सन्नाटा और अँधेरे को शक्ल देतीं कहानियाँ —मृत्युंजय पाण्डेय 130

सामाजिक विसंगतियों से जूझती कहानियाँ

■ डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह

आज भी हमारे बीच में कुछ ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने लिखा तो बहुत है, अपने कथ्य में समाज से जुड़े जीवंत मुद्दों को स्थान दिया है और शिल्प की दृष्टि से भी उनका लेखन बेजोड़ है लेकिन उन पर जितनी चर्चा होनी चाहिए वह अभी तक नहीं हुई। ऐसी ही महिला लेखिका हैं– सूर्यबाला। उनकी कहानियाँ आज के नव औपनिवेशिक समाज के यथार्थ को बड़े ही चुटीले अंदाज में प्रस्तुत करती हैं। वह सामाजिक मुद्दों को आधार बनाकर लम्बे समय से निरन्तर लिखती चली आ रही हैं। उनकी अविराम लेखनी से अब तक 'एक इंद्रधनुष', 'दिशाहीन', 'थाली भर चांद', 'मुंडेर पर', 'गृह प्रवेश', 'सांझवाती', 'कात्यायनी संवाद', 'सिस्टर! प्लीज आप जाना नहीं', 'मानुष गंध' आदि कहानी संग्रहों के अतिरिक्त 'मेरे संधि–पत्र', 'सुबह के इंतजार तक', 'अग्निपंखी' और 'यामिनी कथा' नामक उपन्यास लिखे जा चुके हैं। 'अजगर करे न चाकरी', 'धृतराष्ट्र टाइम्स', 'देश सेवा के अखाड़े में', 'भगवान ने कहा था' आदि उनके व्यंग्य संग्रह हैं। 'सूर्यबाला : चुनी हुई कहानियाँ' अमन प्रकाशन से प्रकाशित 15 ऐसी कहानियों का संकलन है जिसमें महिलाओं की समस्याओं, उनके मनोभाव, कामकाजी समाज में पलने–बढ़ने वाले बच्चों की स्थितियाँ, वृद्धों की समस्याओं को मजबूती से उठाया गया है। इस संकलन में 'गौरा गुनवंती', 'फरिश्ते', 'मेरी शिनाख्त', 'दादी और रिमोट', 'रहमदिल', 'पूर्णाहुति', 'होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन', 'न किन्नी न', 'माय नेम इज ताता', 'एक स्त्री के कारनामे', 'शहर की सबसे दर्दनाक खबर', 'आदमकद', 'क्या मालूम', 'रेस' एवं 'बाऊजी और बन्दर' कहानियाँ संकलित हैं।

'गौरा गुनवंती' एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने गुणों से सभी का मन जीत लेती है लेकिन कालचक्र उसकी माँ को निगल जाता है और अपनी ताई के यहाँ उसे आश्रय मिलता है। बिन माँ की बच्ची को सभी स्नेह और ममत्व की दृष्टि से देखते हैं। समय के साथ बड़ी होती गौरी के भैया और भाभी को उसके विवाह की चिंता घेरने लगती है। भारतीय समाज में लड़की का विवाह एक बड़ी चिंता का विषय होता है चूँकि विवाह में लगने वाला दहेज उन्हें चैन से रहने नहीं देता। रायसाहब के बड़े बेटे से सुमन और छोटे बेटे से गौरी का विवाह तय होने से दहेज की समस्या खत्म हो जाती है और भैया–भाभी को शुकून मिलता है। 'गौरा गुनवंती' में कथा–लेखिका ने गौरा के माध्यम से बिन माँ–बाप की बच्ची के जीवन संघर्ष को कहानी की कथा का आधार बनाया है। भारतीय समाज में विधवा, वृद्ध और अनाथ बच्चों की मनोव्यथा का जीवंत चित्र इस कहानी में उकेरा गया है। उक्त तीनों की दशा आज भारतीय समाज में दयनीय है जिसे इस कहानी के माध्यम से बखूबी समझा जा सकता है–"ताया की तेरही बीत चुकी थी, मेहमान एक–एक कर जा चुके थे, ताई के हाथों में पहलदार काँच की रंग–बिरंगी चूड़ियों की जगह उनके टूटने के खरोंच भरे निशान थे, बदन पर एक कोरी, सादी धोती, माथे पर दपदपाती लाल ईंगुर की बिन्दी के बिना उनका सूना चौड़ा माथा देखकर मन सिहर जाता था। रीती, सूजी आँखों से सूनी दीवारें निहारती ताई बैठी थी। मैं छह साल की अबोध बच्ची, कैसे ताई का दुःख घटाऊँ, कुछ समझ में न आया...।" (सूर्यबाला : चुनी हुई कहानियाँ, पृ.–14) ताई को स्नेह और ममत्व चाहिए जो उसे गौरी से ही मिलता है और उसके विवाह के बाद समाप्त हो जाने की संभावना से गौरी परेशान हो जाती है–"वह आखिरी कुँवारी रात थी। कोहबर से उठाकर अभी–अभी नाइन कोठरी में बिठा गई थी। हल्दी रंगी पीली साड़ी, कलाई में सुपारी की गाँठ और दूब के कंगन बाँधे, हाथ–पैरों में के उबटन लगाये लौटी, तो भागी–भागी–सी ताई... का दूध गरम करने लगी, दूध लेकर पहुँची, तो ताई की दाहिनी कोहनी उनकी आँखों पर थी। कोठरी की तरह निस्तब्ध, शांत ताई... शीशियों की खत्म होती खुराकें सिलबटों पड़ा बिस्तरें धुन्ध सी हलकी बत्ती जल रही थी और झरोखों से छन–छन कर आती फागुनी हवा और चाँदनी के रेशे बिखर रहे थे।" (सूर्यबाला : चुनी हुई कहानियाँ, पृ. 22)

सूर्यबाला